कक्षा - 11

पाठ - 8

जामुन का पेड़

लेखक कृश्नचंदर

जन्म - 23 नवम्बर 1915

मृत्यु - 8 मार्च 1977

प्रमुख रचनाएँ :-

कहानी - एक गिरजा - ए - खंदक, यूकेलिप्टस की डाली ।

उपन्यास :- शिकस्त, जरगाँव की रानी, सड़क वापस जाती है, आसमान रोशन है, एक गधे की आत्मकथा, अन्नदाता, हम वहशी हैं, जब खेत जागे, बावन पत्ते, एक वायलिन समंदर के किनारे, कागज की नाव, मेरी यादों के किनारे ।

सम्मान - साहित्य अकादमी सहित बहुत से पुरस्कार ।

→ हिन्दी जगत मे काव्यात्मक रोमानियत और शैली की विविधता के कारण अपना अलग मुकाम बनाया है ।

→ ये प्रगतिशील लेखक थे व यथार्थवादी नजरिए से लिखे जाने वाले साहित्य के पक्षधर थे ।

→ बाद मे इन्होने लेखन को ही रोजी - रोटी का सहारा बनाया ।

→ इन्होने मुख्यत: ~~हिन्दी~~ उर्दू में लिखा किन्तु भारत की स्वतंत्रता के बाद मुख्यत: हिन्दी में लिखा ।

शब्दार्थ :-

अक्कड़ - आँधी
सेक्रेटेरियेट - सचिवालय
रुआँसा - रोता हुआ सा
ताज्जुब - हैरानी
अंडर - अवर सचिव
ज्वाइंट - संयुक्त
मनचला - बेफ़िक्र
हॉर्टीकल्चर - उद्यान कृषि
प्लास्टिक सर्जरी - शरीर पर त्वचा लगाने की शल्य-चिकित्सा।
तरापुल - उपेक्षा, विलंब, देर
छन्द - लयहीन रचना
जवाब देना - समाप्त होना
पाँत - पंक्ति
एग्रीकल्चर - कृषि

Page No.:
Date:

अभ्यास

पाठ के साथ

1. बेचारा जामुन का पेड़। कितना फलदार था। और इसकी जामुनें कितनी रसीली होती थीं।

(क) ये संवाद कहानी के किस प्रसंग में आए हैं?

उत्तर यह संवाद सेक्रेटेरियेट के लॉन मे लगे जामुन के पेड के गिरने के संदर्भ मे आया है। उपर्युक्त संवाद तब कहा गया है जब सेक्रेटेरियेट के लॉन मे लगा पेड आँधी के कारण रात मे गिर पड़ा और उसके नीचे एक आदमी दब जाता है। सुबह होते जब माली ने देखा तो क्लर्क को बताया और वहाँ भीड़ जमा हो गई। वे लोग जामुन के पेड की गुणगान करने लगे इससे स्पष्ट होता है कि वहाँ जमा लोगो को पेड के नीचे दबे व्यक्ति की चिंता नहीं थी।

(ख) इससे लोगों की कैसी मानसिकता का पता चलता है?

उत्तर- इससे लोगो की संवेदनहीन व स्वार्थपरता का ज्ञान होता है। जमा भीड़ को पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति के प्रति कोई सहानुभूति नही होती, अपितु वे गिरे जामुन पेड को याद कर शोक प्रकट करते हैं इससे पता चलता है कि लोग कितने स्वार्थी व मतलबी हैं।

2. दबा हुआ आदमी एक कवि है, यह बात कैसे पता चली और इस जानकारी का फाइल की यात्रा पर क्या असर पड़ा?

Page No. :
Date :

उत्तर - रात को जब माली दबे हुए आदमी को खिचड़ी खिलाते हुए बताया कि मामला ऊपर तक चला गया है। कल सेक्रेटरियो की मीटिंग है और उम्मीद है कि सब ठीक जाएगा, इस बात पर दबे हुए आदमी ने कराहते हुए एक शायरी कही

"ये तो माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक।"

यह सुनकर माली ने कहा क्या तुम शायर हो, दबे हुए व्यक्ति ने हामी भरी और यह बात माली ने सबको बता दी। दबे हुए आदमी के कवि होने से फाइल एग्रीकल्चर, व्यापार, हॉर्टीकल्चर जैसे विभागों से होते हुए आखिरकार कल्चर विभाग तक आ पहुँची। निर्णय लेने में देरी होने के कारण दबा हुआ आदमी अधिक दिन तक जीवित नहीं रह सका और अंतत: मर गया।

3. कृषि - विभाग वालों ने मामले को हॉर्टीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिया ?

उत्तर :- कृषि विभाग वालों ने मामले को हॉर्टीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे यह तर्क दिया कि कृषि विभाग अनाज और खेती - बाड़ी के मामलों मे फैसला करने का हकदार है। जामुन का पेड़ चूँकि एक फलदार पेड़ था, इसलिए यह मामला हॉर्टीकल्चर विभाग के अन्तर्गत आता है।

4. इस पाठ में सरकार के किन - किन विभागों की चर्चा की गई है और पाठ से उनके कार्य के बारे में क्या अंदाजा मिलता है ?

उत्तर- इस पाठ मे सरकार के निम्नलिखित विभागों की चर्चा की गई है और उनके निम्नलिखित कार्य है

(i) कृषि विभाग- इस विभाग का कार्य कृषि संबंधी मामलों की देखरेख करना है।

(ii) व्यापार विभाग - इसका कार्य देश मे होने मे होने वाले व्यापार से संबंधित है।

(iii) हॉर्टीकल्चर विभाग - यह विभाग उद्यानों का रखरखाव करता है।

(iv) मेडिकल विभाग - इसका संबंध शल्य चिकित्सा, दवाई आदि से है।

(v) कल्चरल विभाग - इसका संबंध कला व साहित्य से है।

(vi) फॉरेस्ट विभाग - यह विभाग वनों तथा वन्य - प्राणियो के सुरक्षा हेतु कार्य करता है।

(vii) विदेश विभाग - यह विभाग अंन्तर्राष्ट्रीय संबंधो को मजबूत बनाने तथा उससे संबंधित नीतियों के कार्यान्वियन में सहायता करता है।

पाठ से पता चलता है कि किसी भी विभाग मे संवेदना नहीं है। हर विभाग अपनी जिम्मेदारी से बचना चाहता है।

पाठ के आस - पास

1. कहानी में दो प्रसंग ऐसे है, जहाँ लोग पेड़ के नीचे दबे आदमी को निकालने के लिए कटिबद्ध होते हैं। ऐसा कब - कब होता है और लोगों का यह संकल्प दोनों बार किस - किस वजह से भंग होता है।

कक्षा - 11
पाठ - 8

उ- पहला प्रसंग :- जैसे ही पता चला कि जामुन के पेड़ के नीचे एक आदमी दबा हुआ है, कुछ मनचले क्लर्कों ने कानून की परवाह किए बिना पेड़ हटाकर उसे बाहर ~~निकल~~ निकालने का निश्चय किया। वे ऐसा करने वाले ही थे कि तभी सुपरिटेंडेंट दौड़ता हुआ ~~और~~ आया और बताया कि यह पेड़ कृषि विभाग के अंतर्गत आता है और उनकी अनुमति के बिना हम इसे हटा नहीं सकते।

दूसरा प्रसंग → जैसे ही फॉरेस्ट विभाग के कर्मचारी आरी-कुल्हाड़ी लेकर पेड़ काटने पहुँचे, तभी विदेश विभाग से आदेश आया कि यह पेड़ नहीं काटा जा सकता क्योंकि यह पेड़ पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने लगाया था। पेड़ काटने से दोनो राज्यों के मध्य संबंध बिगड़ सकते हैं और उनसे मिलने वाली सहायता भी बंद हो सकती है।

2. यह कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है कि इस कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। अपने उत्तर के पक्ष मे तर्क दें।

उत्तर - यह कहना बिलकुल युक्तिसंगत है कि इस कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। कहानी का आरंभ और अंत भी करुणाजनक है। जामुन के पेड़ के गिरने पर सभी एकत्रित लोग उसके रसीले फल को याद करके अफ़सोस व्यक्त करते हैं। किन्तु पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति की कराह को नहीं सुनते। कुछ मनचले क्लर्क आदमी को काटकर उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ने की बात कहते हैं, ताकि पेड़ को कोई नुकसान न पहुँचे। कल्चर ~~विभाव~~ विभाग का सचिव उसे अकादमी का सदस्य बनाता है, परन्तु उसे

कक्षा - 11

पाठ - 8

बचाने का प्रयास नहीं करता है। देशो के संबंध के नाम पर आम - आदमी की बलि चढ़ाई जाती है। अंत मे वह आदमी मर जाता है। चीटियों की एक लंबी पंक्ति उसके मुँह मे चली जा रही है, यह अत्यन्त ही कारुणिक दृश्य है।

3. यदि आप माली की जगह पर होते, तो हुकूमत के फैसले का इंतजार करते या नहीं? अगर हाँ, तो क्यो? और नही, तो क्यों?

उत्तर यदि मैं माली की जगह पर होता तो हुकूमत के फैसले का इंतजार नहीं करता, क्योकि किसी व्यक्ति के जीवन से बढ़कर कोई कानून या नियम नहीं है। ~~यदि~~ मैं अपनी ओर से सेक्रेटेरियेट विभाग के लोगो को इकट्ठा कर, पेड को हटवाता। उन्हें समझता कि पेड़ काटना अपराध माना जाता है, पर गिरे हुए पेड़ को ~~क~~ हटाना अपराध नही। इस तरह से मैं उस आदमी को बचा लेता।

शीर्षक सुझाइए

कहानी के वैकल्पिक शीर्षक सुझाएं। निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखकर शीर्षक गढ़े जा सकते है -

• कहानी में बार - बार फाइल का जिक्र आया है और अंत मे दबे हुए आदमी के जीवन की फाइल पूर्ण होने की बात कही गई है।

उत्तर - मेरी जीवन की फाइल

कक्षा - 11
पाठ - 8

- सरकारी दफ़्तरों की लंबी और विवेकहीन कार्यप्रणाली की ओर बार - बार इशारा किया गया है।

उत्तर: - लंबी तथा विवेकहीन सरकारी प्रणाली।
अफसरों के चक्कर मे चकराती फाइल।

- कहानी का मुख्य पात्र उस विवेकहीनता का शिकार हो जाता है।

उत्तर लापरवाही तथा विवेकहीनता के दुष्परिणाम।
फाइल से हुई मौत।

भाषा की बात

प्रश्न पाठ्य पुस्तक से देखकर स्वयं लिखिए।

उत्तर -1 अर्जेंट - आवश्यक
फॉरेस्ट डिपार्टमेंट - वन विभाग
मेंबर - सदस्य
डिप्टी सेक्रेटरी - उप सचिव
चीफ़ सेक्रेटरी - मुख्य सचिव
मिनिस्टर - मंत्री
अंडर सेक्रेटरी - अवर सचिव
हॉर्टीकलचर डिपार्टमेंट - उद्यान कृषि - विभाग
एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट - कृषि विभाग

उत्तर -(2)
~~उत्तर~~(2) सरल वाक्य :- ऐसा वाक्य जिसमे एक ही क्रिया एवं एक ही कर्ता होता है या जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य एवं एक ही विधेय होता है उसे सरल वाक्य कहते है।

पाठ - 8

संयुक्त वाक्य :- ऐसा वाक्य जिसमे दो या दो से अधिक उपवाक्य हो एवं सभी उपवाक्य प्रधान हों, ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते है।

संयुक्त वाक्य	सरल वाक्य
1. माली ने अचंभे से मुँह मे ऊँगली दबा ली और चकित भाव से बोला।	1. माली अचंभे से मुँह में ऊँगली दबाकर चकित भाव से बोला।
2. इतना बड़ा कवि 'ओस के फूल' का लेखक और हमारी अकादमी का मेंबर नहीं है।	2. 'ओस के फूल' का लेखक बड़ा कवि होते हुए भी हमारी अकादमी का मेंबर नहीं है।
3. जामुन का पेड़ चूँकि फलदार पेड़ है, इसलिए यह पेड़ हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।	3. जामुन का पेड़ फलदार होने के कारण हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।
4. आधा आदमी उधर से निकल आएगा और पेड़ वहीं का वहीं रहेगा।	4. आधा आदमी उधर से निकल आने पर पेड़ वहीं का वही रहेगा।

उत्तर(3) काल्पनिक साक्षात्कार -

साक्षात्कारकर्त्ता - क्या आप ही इस विभाग के सुपरिंटेंडेंट हैं ?
सुपरिंटेंडेंट - जी हाँ।
साक्षात्कारकर्त्ता - तब तो आपको पता ही होगा कि आपके लॉन मे एक पेड़ गिरने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई।

Page No. :
Date :

पाठ - 8

सुपरिंटेंडेंट - इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।

साक्षात्कारकर्त्ता - लेकिन माली को आपने ही पेड़ काटने से मना किया था।

सुपरिंटेंडेंट - देखिए जनाब, हम सरकारी कर्मचारी हैं इसलिए कार्य को नियम और कानून के दायरे में रहकर करना पड़ता है।

साक्षात्कारकर्त्ता - चाहे इस नियम और कानून के कारण किसी की जान ही क्यों न चली जाए।

सुपरिंटेंडेंट - नहीं। ऐसा हमने कब कहा? लेकिन...

साक्षात्कारकर्त्ता - लेकिन क्या?

सुपरिंटेंडेंट - मैंने तो ये कहा कि मैं कानून के दायरे के बाहर नहीं जा सकता था। मुझे ऊपर जवाब देना पड़ता है।

साक्षात्कारकर्त्ता - पर ये कहाँ लिखा है कि मरते हुए आदमी को छोड़कर आप फाइल के चक्कर में पड़े रहें।

सुपरिंटेंडेंट - मैं स्वयं निर्णय कैसे लेता? यह काम मेरे विभाग से संबंधित ही नहीं था।

साक्षात्कारकर्त्ता - तो इस बेचारे व्यक्ति के मरने की जिम्मेदारी किस पर जाती है?

सुपरिंटेंडेंट - मैं इस बारे मे आगे कोई बात नहीं करना चाहता हुँ। मुझे जो ठीक लगा, वह मैंने किया। अच्छा नमस्कार।